Lecture No - (1)

(1)

Name of the college - APSM College, Barauni, Begusarai
Name - Dr. Bharti Kumari (G.T)
Deptt - AIH&C
Lession plan - B.A, AIH&C(H), part-I, paper-I
Name of the Topic - Mauryakalin Social Status.
Date - 15-04-2021

मौर्यकालीन सामाजिक अवस्था :—

(1) वर्ण व्यवस्था
(A) विवाह
(B) दास - प्रथा
(C) भोजन
(D) आमोद - प्रमोद
(E) नैतिक स्तर
(F) सौन्दर्य प्रेम

(A) वर्ण व्यवस्था :— अशोक के पाँचवे शिलालेख के अनुसार मौर्य-कालीन भारत में अनेक वर्ण थे, यहाँ वर्ण से मतलब जाति से है। वर्ण की व्यवस्था यथावत थी। और समाज ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र में बँटा हुआ था। इस समय वर्ण - व्यवस्था में जटिलता आ गई थी। इसका आधार कर्म न होकर जन्म ही हो गया था। कोई व्यक्ति एक वर्ण से दूसरे वर्ण का सदस्य नहीं बन सकता था। वर्ण व्यवस्था की रक्षा करना राज्य का प्रमुख कर्तव्य था। उस समय वर्णाश्रम पर विशेष बल दिया जाता था। उस समय भी प्रत्येक व्यक्ति को ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ संन्यास आश्रमों में व्यतीत करना पड़ता था। इस प्रकार समाज का आधार वर्ण - व्यवस्था पर और वर्णाश्रम था। इन चार वर्णों के अतिरिक्त उस समय कुछ अन्य व्यावसायिक वर्ग भी थे।

(B) विवाह → विवाह शास्त्रों के अनुसार होते थे और आठों प्रकार के विवाहों का प्रचलन था। विवाह अपनी
P.T.O.

जाति में होता था। अंतरजातीय विवाह का उल्लेख उस समय के साहित्य में मिलता है। साधारणतः एक विवाह का प्रचलन था।

(C) दास प्रथा :— दास प्रथा संस्था के रूप में विद्यमान थी। इसका वर्णन स्मृतियों और अभिलेखों में मिलता है।
ग्रीक लेखकों का विश्वास था कि भारत में दास-प्रथा थी ही नहीं।

(D) भोजन :— भारतीय मितव्ययिता से रहते थे और अच्छे नियमों का पालन करते थे। उस समय चोरी का अभाव था जीवन सीधा सादा था भोजन में माँस और मदिरा की दुकानों पर राज्य की ओर से नियंत्रण था। भोजन करने के तरीके सम्बंध में मेगास्थनीज लिखता है कि "जब भारतीय भोजन करने के लिए बैठते हैं तो उनके सामने एक तिपाई के आकार की मेज रख दी जाती थी। उसके ऊपर सोने का प्याला रहता था, जिसमें पहले चावल डाले जाते थे। धनी और गरीबों के भोजन में काफी अंतर था।

(E) आमोद-प्रमोद :— अशोक के अभिलेखों में विहार-यात्रा का उल्लेख मिलता है, जिसका प्रमुख अंग मृगया (शिकार) होता था। मेगास्थनीज ने भी शिकार का उल्लेख किया है। आमोद-प्रमोद में खेल-तमाशे, नृत्य, गायन, खेलकूद आदि कला प्रदर्शन का रसिकों का मनोरंजन करते थे। गाँव में शालाएँ होती थी जहाँ अन्य प्रकार के खेलकूद होते थे।

(F) नैतिक स्तर :— मेगास्थनीज ने भारतीय चरित्र एवं व्यक्तित्व की बड़ी प्रशंसा की है। भारतीय सत्य और गुण का आदर करते थे। आचरण में वे सरल एवं मितव्ययी थे, वे अपनी संपत्ति को वे बहुधा असुरक्षित अवस्था में ही छोड़ जाते थे। वे न्यायालयों की शरण यदा-कदा ही लेते थे। भारतवासी पर मिथ्याभाषण का आरोप नहीं लगाया जा सकता। वे सन के बने हुए टुकड़ों पर पत्र लिखकर के पेड़ों की छाल लिखने के काम आती थी। सत्य और गुण का आदर भारत में होता था।

(G) सौन्दर्य प्रेम :— भारतीय बारीकी और सुंदरता के प्रेमी थे उनके वस्त्रों पर सोने का काम किया रहता था और वस्त्र मूल्यवान रत्नों से विभूषित रहते थे। वे लोग मलमल के बने फूलदार वस्त्र पहनते थे। सेवकगण उनके पीछे छाता लगाये रहते थे। धनी और दरिद्र के बीच वेशभूषा में भी फर्क था, जो तत्कालीन कलाओं में देखा जा सकता है।

भारती कुमारी
A-I.H.-2 C
15/07/2020

सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा, आदि के खान थे। मणिमुक्ताओं का भी उपयोग होता था। पत्थर पर पालिश का काम अपने चरमोत्कर्ष पर था।

हथियार और कृषि सम्बंधी औजार भी बड़े पैमाने पर बनाये जाते थे। नदी में नौचलाना के लिए बड़े-बड़े जहाज भी बनाए जाते थे। सुवर्णजटित और रत्नजटित पोशाकों का वर्णन ग्रीक यात्रियों के लेखों में मिलता है। धातुओं में सोना, चाँदी, लोहा, ताँबा जस्ता आदि का व्यवहार होता है। खानों पर राजा का एकाधिपत्य था और उस विभाग का अध्यक्ष "आकराध्यक्ष" कहलाता था। धनी लोग मुल्यवान आभूषणों का व्यवहार करते थे। मौर्य साम्राज्य में लकड़ियों का भी प्रचुर मात्रा में प्रयोग होता था। चर्म व्यवसाय भी उन्नत अवस्था में था। सुरा का व्यवसाय भी होता था। राज्य की ओर से व्यवसायियों को पूर्ण संरक्षण प्राप्त था। बेइमान व्यवसायियों को कड़ी सजा दी जाती थी।

राजनीतिक एकता की स्थापना से व्यापार को प्रोत्साहन मिलना स्वाभाविक ही था। यातायात में वृद्धि के साथ-साथ सुरक्षा की गारंटी हुई। सामानों का आदान-प्रदान संभव हो सका, कारण अब सभी व्यापार मार्गों पर मौर्यों का पूर्ण नियंत्रण हो चुका था। मेगास्थनीज के अनुसार — "मार्ग निर्माण के लिए एक अलग अधिकारी होता था जो Agronomoi के नाम से प्रख्यात था। कौटिल्य ने स्थलमार्ग की व्यापार की अपेक्षा नदी मार्गीय व्यापार को अधिक सुरक्षित माना है। समुद्री मार्ग से भारत के व्यापारी अदन तक जाते थे और भारत और मिस्र से आनेवाली व्यापारिक वस्तुएँ अलेक्जेंड्रिया के तटवर्ती बंदरगाहों पर उतरती थी। विदेशी व्यापार सरकारी नियंत्रण में था। आयात-निर्यात पर सरकारी नियंत्रण था। बिक्री कर की व्यवस्था थी और बिक्री कर न देनेवाले को मृत्युदंड तक की सजा दी जाती थी। सभी महत्वपूर्ण शहर या प्रशासन केन्द्र व्यापार मार्ग पर स्थित थे।

भारतीय शहरीकरण के इस चरण में उनके फलनेफूलने का मुख्य कारण मौर्य साम्राज्य की स्थापना था। इसके विशेष योगदान व्यापारी और शिल्पियों का था। सिक्कों के अखिल भारतीय विचरण से इसके सहायता पहुँची और कौटिल्य ने भी इस ओर P.T.O.

हमारा ध्यान आकृष्ट किया है। लौह का प्रचलन तो सर्वव्यापी हो ही चुका था। समस्त गंगाघाटी के उत्खनन से जो भौतिक उपकरण मिले हैं उनसे स्पष्ट है कि इन तत्वों का प्रस्फुटीकरण मौर्ययुगीन मगध के संपर्क के कारण ही संभव हुआ होगा — मौर्य के कारण यानि कि मौर्य के सम्पर्क के कारण ही वह तत्व दक्षिणी पठार तक पहुँचा।

आंतरिक व्यापार के लिए देश में सुरक्षित एवं सुव्यवस्थित स्थलमार्ग थे। पाटलिपुत्र से पश्चिमोत्तर प्रदेश को जानेवाली 1500 कोस की लम्बी सड़क थी। दूसरा महत्वपूर्ण मार्ग हैमवतपथ था, जो हिमालय की ओर जाता था। दक्षिणभारत को जानेवाले कई मार्ग थे। इन बड़े-बड़े मार्गों से छोटे-छोटे उपमार्ग भी निकलते थे। प्रमुख मार्गों पर आधे-आधे कोस की दूरी पर दूरीसूचक चिन्ह बने रहते थे। स्ट्रैबो का कथन है — "कि कुछ मैजिस्ट्रेट सार्वजनिक मार्गों की देखभाल करते थे।" राज्य कर का बड़ा भाग व्यापारियों से आता था। मौर्यकालीन भारत का सीधा सम्बंध सीरिया, मिस्र तथा पश्चिम के अन्यान्य देशों के साथ था। राजधानी में विदेशी लोग बड़ी संख्या में रहते थे। जिनकी देखभाल के लिए नगरपालिका का एक समिति थी। आंतरिक व्यापार देश के नौमार्ग से भी होता था। छोटी-नदियों में छोटी-नौकाएँ और बड़ी नदियों में बड़ी नौकाएँ चलती थी, डोंगी का प्रयोग भी होता था। कश्मीर, कोशल विदर्भ और कलिंग हीरों के लिए प्रख्यात थे। हिमालय प्रदेश चमड़े के लिए, मगध और सुवर्णकुड्य वृक्षों के रेशों से बने वस्त्रों के लिए।

(B) <u>सिक्के एवं विनिमय के साधन</u> :— कौटिल्य के अर्थशास्त्र में सुवर्ण, कर्षापण, माषक और काकणी, नामक सिक्कों का उल्लेख मिलता है। मुद्रानिर्माण एकमात्र सरकारी टकसाल में होता था, किन्तु कोई व्यक्ति अपनी धातु देकर सरकारी टकसाल में भी रुपया बनवा सकता था। टकसाल के अधिकारियों में कौटिल्य ने सौवर्णिक और लक्षणाध्यक्ष -(लक्षणाध्यक्ष) का वर्णन मिलता है। सिक्के के अतिरिक्त विनिमय के अन्य साधन भी थे। वस्तुओं का आदान-प्रदान भी होता था।

पुरातात्विक साक्ष्यों से स्पष्ट है कि प्रशासनिक केन्द्रों को छोड़कर कुछ ऐसे नगर भी थे, जो प्रसिद्ध व्यापार मार्गों पर अवस्थित थे। कौटिल्य की मुद्रा-प्रणाली की पुष्टि आहत मुद्राओं के अखिल भारतीय वितरण से होती है। मेखलों का (ring wells) का प्रयोग भी सर्वप्रथम इसी काल में हुआ। — भारती कुमारी 15-04-2021